प्रेस विज्ञप्ति **दिनाँक : 12-02-2006**

शबरीकुंभ : दूसरा दिन

कुंभ का दूसरा दिन – संत सम्मेलन, महिला सम्मेलन और युवा सम्मेलन से प्रारंभ हुआ।

वनवासी को सजग किया जाय तो वे, अपनी लड़ाई स्वयं लड़ सकते हैं। – सुदर्शन जी

संत सम्मेलन :-

रा. स्व. संघ के प.पू. सर संघचालक श्री सुदर्शनजी ने बताया कि आज हिन्दू समाज जागृत हो रहा है और उसके लक्षण स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। मुस्लिम संगठन भी राम जन्मभूमि, गौहत्या बंदी, निकाह की लिखापढ़ी, समान नागरिक संहिता आदि के ठहराव पारित कर रहे हैं। ऐसे परिवर्तन ईसाइयों के द्वारा हो तो वे भी स्वीकार्य होंगे। आज के समय में दैवी शक्ति को जागृत करने, और विजय की कामना के साथ आगे बढ़ने का उन्होंने आह्वान किया। वे आज डांग जिला में आयोजित शबरीकुंभ मेला में संत सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। शबरीकुंभ मेला के इस संत सम्मेलन में विदेशी शक्तियों के राक्षसी विचार को अब और सहन न करके समग्र हिन्दू समाज को संगठित होकर काम करने को उन्होंने कहा। साथ मिलकर गाँव-गाँव भजन कीर्तन, धर्म स्थानों के पुनरुद्धार करने, छुआछूत के भेदभाव दूर करने तथा पश्चिमी विचार में भटक गये लोगों को पुनः समाज से जोड़ने की उन्होंने पुर जोर अपील की।

श्री सुदर्शन जी ने आगे कहा कि हिन्दू समाज को उसके गौरवशाली, पराक्रमलक्षी, भूतकाल को पुनः स्मरण कराने की आवश्यकता है। अंग्रेजों ने चालाकीपूर्वक हिन्दू भूतकाल को विछिन्न कर दिया है। हम क्या थे, कैसे कैसे पराक्रम किये हैं, यह आज की नई पीढी को बताने की आवश्यकता है। हमने आज तक सुदीर्घ धर्मयुद्ध लड़े हैं उनमें नैतिकता थी। परंतु भगवान कृष्ण ने भी संदेशा दिया है कि यदि शत्रु कपट युद्ध करता हो तो हमें भी कपट युद्ध करना चाहिए। जिन्होंने सारी जिन्दगी धर्म का पालन नहीं किया, अंत में धर्म उनकी रक्षा नहीं करता।

लोभ, लालच द्वारा हो रहे धर्म परिवर्तन के संदर्भ में श्री सुदर्शन ने कहा कि वनवासियों को यदि इन बातों से सजग किया जाय तो वनवासी अपनी लड़ाई स्वयं लड़ सकते हैं। हिन्दू समाज को संगठित होकर आगे बढ़ने का आह्वान करते हुये उन्होंने कहा कि सबको हिन्दू होने का गर्व होना चाहिए। भारत में रहनेवाले ईसाई तथा मुसलमानों को अपने वतन भारत तथा पूर्वजों के प्रति आदर रखना चाहिए।

विदर्भ के संत श्री सुधीर महाराज ने कहा कि प्रत्येक संत को आज के संदर्भ में समाज और धर्म की रक्षा करने हेतु प्रत्येक मास में दस दिन समाज कार्य हेतु अर्पित करने चाहिए। धर्म मात्र एक ही है और वह है वैदिक धर्म। उन्होंने प्रत्येक संत को वंचित के घर भोजन करने, प्रसाद लेने और उसे शिक्षित करने का अनुरोध किया। संतश्री पुरुषोत्तम स्वरूप महाराज ने राक्षसी, आसुरी शक्तिओं के वैचारिक आर्थिक आक्रमण के सामने भारतीय संस्कृति को बचाने को जागृत रहने को कहा। उन्होंने कहा कि अहिंसा परमोधर्म माननेवाले

हिन्दू समाज को नपुंसक नहीं मानना चाहिए। डांग क्षेत्र के संत श्री पी. पी. स्वामी ने कहा डांग में मात्र 311 गाँव हैं और उन्हें संतगण योजना बनाकर दत्तक ले लें तो महत्वपूर्ण कार्य हो सकता है।

मुंबई के इस्कोन मंदिर के स्वामी जी ने बताया कि वैदिक संस्कृति अपनाकर उसके आधार पर वे जीवन जी रहे हैं। भारत आगामी बीस वर्ष में विश्व का नेतृत्व करेगा, क्योंकि पश्चिम के पास टेकनोलोजी है परंतु दिमाग नहीं है।

<u>महिला सम्मेलन</u>

महिला सम्मेलन की शुरूआत वनवासी गीतों से तथा सम्मेलन की अध्यक्षा साध्वी शिवा सरस्वती और राष्ट्र सेविका समिति की सह-प्रमुख संचालिका प्रमिला ताई मेढ़े जी के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलन से हुई। मंच पर साध्वी कनकेश्वरी जी, साध्वी गार्गी जी, साध्वी ओंकारानंदजी के साथ लक्ष्मी कांता चावला, वनवासी कल्याम आश्रम की माध्वी ताई देशपांडे, ठमाताई पवार और बुदरी ताती उपस्थित थी। अपने भाषण में प्रमिलाताई ने कहा, ''शबरी कुंभ से सद्विचारों का जल और सद्वृत्ति का प्रसार लेकर गाँव-गाँव जाना मातृशक्ति की जिम्मेदारी है। माताओं को जागृत हो कर 'जननी और जन्मभूमि' को बेचने की मानसिकता को जड़ से समाप्त करना है। लक्ष्मीकांता चावला ने कहा, ''महिलायें जब खड़ी होती हैं तो वे सहस्त्र भुजा होती हैं और उनके स्वर में भगवान श्रीकृष्ण के पांचजन्य का स्वर मिल जाता है। भारत की बेटियाँ संतों की, वीरों की बहनें हैं।'' छत्तीसगढ़ के वनवासी क्षेत्र में महिलाओं के बीच कार्यरत बुदरी ताती ने कहा, ''मातृशक्ति तेजस्वी और प्रखर है। महिलाओं को इस शक्ति को पहचानना चाहिए। महिलायें जागृत होने से अपनी संस्कृति और संस्कार बचेगा। महिलाओं में नेतृत्व करने की क्षमता है और यह शबरी कुंभ सफलता के लिये प्रेरणादायक बनेगा।

साध्वी शिवा सरस्वती जी ने कहा, ''राष्ट्र और समाज का चिंतन करने का दायित्व, मातृशक्ति पर है। समाज में देशभक्ति और संस्कार फैलाने का दायित्व भी मातृशक्ति पर है।''

युवा सम्मेलन :

'हिन्दू नहीं आदिवासी हो' के फैलाये जा रहे भ्रम का तर्कबद्ध उत्तर देना होगा- गुणवंतसिंह कोठारी

शबरीकुंभ में दिनांक 12-2-2006 को युवक सम्मेलन हुआ। सुबह 10-30 बजे से 12-30 बजे तक यह सम्मेलन चला। वनवासी कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री गुणवंतसिंह कोठारी और रा. स्व. संघ के अ.भा. सह संपर्क प्रमुख माननीय श्री इन्द्रेशजी ने इस सम्मेलन को संबोधित किया।

सम्मेलन में त्रिपुरा की जनजाति संघर्ष के सूत्रधार श्री विक्रम बहादुर जमातिया भी उपस्थित रहे। आतंकवाद और असमान आबादी वृद्धि को विषय बनाकर किये गये इस युवक सम्मेलन में असंख्य युवकों ने भाग लिया।

श्री कोठारी ने कहा कि यह भम्र फैलाया जा रहा है कि वनवासी हिन्दू नहीं आदिवासी हैं, हमें इसका तर्कयुक्त उत्तर देना होगा। उन्होंने शबरी कुंभ आयोजन का उद्देश्य समझाते हुये कहा कि धर्म, राष्ट्र और भारतमाता की रक्षा हेतु सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की रक्षा बिना प्राणहीन शरीर जैसी स्थिति होगी।

उन्होंने राष्ट्र की परंपरा को जीवंत रखने के आह्वान के साथ कहा कि देश भी मर रहा है, राष्ट्र भी मर रहा है, परंतु उसकी मृत्यु आँखों से दिखाई नहीं देती। इतिहास लिखा जाता है तब यह बात ध्यान में आती है। यूनान और रोम ने उनके प्राचीन मूल्य छोड़े और मान्यतायें छोड़ी, आज मानचित्र में उनका नामोनिशान दिखाई नहीं देता।

अपने उद्‌बोधन में श्री कोठारी ने कहा कि आज राम और कृष्ण जन्म लें तो उन्हें उनकी परंपरा के साथ जोड़नेवाला समाज मौजूद है। वनवासियों के त्याग, बलिदान और शौर्य की गाथाओं को याद करते हुये उन्होंने कहा कि राम के रावण के सामने संघर्ष में अयोध्या या जनकपुर की सेना नहीं आई थी। वनवासियों ने ही आगे बढ़कर धर्म की स्थापना हेतु राम की सहायता की। समुद्र पर तैरते पत्थरों का पुल बनानेवाले पुरातन इंजीनियर नल और नील भी वनवासी ही थे। घटोत्कच और बर्बरीक के धर्म हेतु बलिदान को भी उन्होंने याद किया और कहा कि आज वनवासी जिन श्याम बाबा खाटुक की पूजा करते हैं वह वही बर्बरीक हैं। सोमनाथ युद्ध में वेगडा भील के बलिदान का भी उन्होंने स्मरण कराया। साथ-साथ मेवाड के राजा प्रताप के संघर्ष में बारह वर्ष तक साथ देनेवाले भील, मीणा और गरासिया समाज की बात भी उन्होंने युवकों के समक्ष रखी। अंग्रेजों, मुगलों और विदेशियों के सामने संघर्षरत अनेक वनवासी योद्धाओं का उन्होंने उल्लेख किया। अपने प्रवचन के अंत में उन्होंने वनवासियों से नक्सवादिओं के सामने संघर्ष करने का अनुरोध किया।

''मुश्किलें हैं तो मुश्किलों से घबड़ाना क्या,

दिवालों और खिड़कियों से रास्ते बनाते हैं।'' - इन्द्रेशजी

अपने उद्‌बोधन की काव्यमय शुरूआत करते हुये रा.स्व. संघ के अखिल भारतीय सह संपर्क प्रमुख मा. इन्द्रेशजी ने बताया कि भारतीय संस्कृति और परंपरा के कारण ही इस राष्ट्र की भूमि को माता का स्थान प्राप्त हुआ है। कहीं भी इंग्लैंड माता या जर्मनी माता सुनाई नहीं देता परंतु यहाँ भारत माता की पूजा की जाती है। धर्म परिवर्तन पर तीव्र प्रहार करते हुये उन्होंने कहा कि हमारे जन्म का निर्णय हमने नहीं भगवान ने किया है। जिस धर्म या जनजाति में जन्म लिया है उसका निर्णय भी भगवान ने किया है। इसलिये अपने धर्म या जाति बदलने वाले लोग भगवान के शत्रु हैं और इस लिये हमारे भी शत्रु हैं। तथाकथित सेक्युलरिस्ट और कम्युनिस्टों पर प्रहार करते हुये कहा कि वे नगरवासी और वनवासी के बीच विभाजन कराना चाहते हैं। भगवान राम ने माता शबरी के माध्यम से ब्राह्मण से जनजाति और महल से झोंपड़ी तक सेतु बनाया है। जनजाति के युवकों को नशाखोरी का त्याग कर कुटुम्ब को टूटने से बचाने का उन्होंने अनुरोध किया। उन्होंने समाज को भ्रष्टाचार से मुक्त कराने का आह्वान भी किया। उन्होंने यह मार्मिक प्रश्न भी किया कि नक्सलवादी कभी चर्च या मस्जिद पर हमला क्यों नहीं करते।

कृष्णपालसिंह भदौरिया

संपादक

विश्व संवाद केन्द्र - गुजरात

Phone No. : (079) 26579301, Fax. No. : (079) 26579220
E-mail : vskguj@icenet.co.in, info@vskgujarat.com
Website : www.vskgujarat.com